

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



7
2018

VOL. 154

Founder's Essay

एक नेता के गुण

ऐसे कई अनिवार्य गुण हैं जो नेतृत्व के पदों में रहने वाले लोगों में होना चाहिए, जैसेकि दूरदर्शिता और निर्णायकता। लेकिन इन मूलभूत गुणों में से सबसे महत्वपूर्ण क्या है, अगर किसी के पास एक नहीं है, तो वह नेता बनने की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है? मुझे लगता है कि यह एक विश्वास है।

जब आपने लोगों का विश्वास नहीं जीता है, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि आपने उनका दिल जीतने के लिए कितने ही अद्भुत शब्दों को एक साथ पिरोया है, क्योंकि वे शब्द उनके दिल तक नहीं पहुँचेंगे। लेकिन एक नेता जिसने लोगों का विश्वास अर्जित किया है, वह केवल एक ही शब्द के साथ लोगों के दिल दिमाग को बदल सकता है।

यह विश्वास कहाँ से आता है? सबसे पहले यह ईमानदारी से आता है। "ईमानदारी तब होती है जब हम किसी व्यक्ति में थोड़ा सा अंतर नहीं देखते हैं, जब हम उनके सार्वजनिक चेहरे को देखते

हैं या उनके निजी जीवन को देखते हैं। विश्वास का एक अन्य श्रोत सबसे उपर सभी लोगों की देखभाल करने का झुकाव है।

लेकिन, व्यक्ति का प्रकार पूरी तरह से बदल जाता है, जब अपने वरिष्ठों से झुकाव की बातें करते समय झुकाता है, और जब अधीनस्थों की बातें आती है, तो उसका दृष्टिकोण बेसिरपैर की बातें करने में बदल जाता है, ऐसा गेंदबाजी में भी नहीं होता है।

नेता एक ऐसे व्यक्ति का प्रकार है, जो खुद के बारे में भूल कर दूसरों की खुशी के बारे में सोचता है। हमारी खुशी और सफलता का आधार दूसरों के साथ हमारे संबंध है। मुझे लगता है कि हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि जो लोग दूसरों के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता नहीं देते हैं वे कभी भी किसी भी चीज़ में सफल नहीं होंगे।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co. 1997), pp154-155

Living the Lotus Vol. 154 (July 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

शब्द जिसका प्रभाव शान्त है

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



सत्यवादिता एवं निष्कपटता

सम्यक वचन आष्टांगिक मार्ग एक अंग है, जो शाक्यमुनि की आधारभूत धर्मदेशना है। इसका अर्थ है उन शब्दों को बोलना जो सत्य के समनुरूप हैं, परन्तु प्रायः हम मुश्किल से 'सही बोलने' के प्रति सजग रहते हैं, है न? इसलिए, जब भी हमें सम्यक वाणी के विषय कहा जाता है, संभवतः, अधिक लोग नहीं निकलेंगे जो तत्क्षण इसे अपने दैनिक अभ्यासों से जोड़ लेंगे। फिर भी, अन्य लोगों के साथ दैनिक बातचीत में, हमें स्वाभाविक रूप से इस तरह से बातचीत करनी चाहिए कि जिसका स्थिति पर शांत प्रभाव पड़ता है। इसका कारण है कि ऐसा करना अधिक आनन्ददायक है और हर किसी के मन को सुखचैन मिलेगा।

सम्यक वाणी को इस रूप में समझा जा सकता है कि जो चीजें लाभदायक हैं, और जैसाकि हमारे जीवन में शांति और सद्भाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, यानि, क्योंकि वे हमारे लिए लाभदायक हैं। जिन शब्दों का परिस्थिति पर शांत प्रभाव पड़ता है, उन्हें वास्तव में सम्यक वाणी कहा जा सकता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि हर कोई, बिना किसी ज्ञान के, सही संवाद करने का अभ्यास कर रहे हैं।

हालाँकि, कभी-कभी हम ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो शांति और सद्भाव को बाधित करता है। इसका एक विशेष कारण झूठ बोलना है जो हमारी अपनी परिस्थितियों में मदद करता है या वास्तव में जो हुआ उसके लिए झूठा कारण देना है।

गृहस्थ शिष्यों को दी गयी सुझावों में, शाक्यमुनि ने कहा: "आपको दूसरों से झूठ नहीं बोलना चाहिए," और यह भी, "केवल उन शब्दों का प्रयोग करें जिनसे आपको परेशानी नहीं हो और अन्य लोगों को आघात नहीं पहुँचे।" झूठ लोगों को गुमराह करता है, सद्भाव को नष्ट करता है, और अन्त में स्वयं के लिए परेशानी का कारण बनता है। इस तरह से सोचते हुए, सच्ची बातों को कहने का अभ्यास करने से महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि आप क्या कहते हैं या उसे कैसे कहते हैं, बल्कि यह कि आप विवेक को नहीं भूलें जो आपके सत्यवादी बने रहने में सहायक है।

2013 में तीसवाँ निवानो शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाले डॉ गुन्नार स्टाल्सेट, नॉर्वे के चर्च में ओस्लो के सेवानिवृत्त बिशप और नार्वेजियन नोबेल कमेटी के पूर्व सदस्य, एक आदर्श मॉडल हैं जो मुझे याद दिलाते हैं कि दूसरों के प्रति हमारा जो दृष्टिकोण है, जिनसे हम बातचीत करते हैं, वे हमारे शब्दों की सामग्री से अधिक महत्वपूर्ण है।

यहाँ तक कि जब एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभागियों के विभिन्न विचारों के होते हुये भी, बिशप

स्टाल्सेट वहाँ कुशलतापूर्वक उनके बीच में सहमति बनाने का कार्य किया। फिर भी, वे बातूनी नहीं थे। इसके विपरीत, वे अल्पभाषी थे। वे ध्यान से सुनते थे कि विभिन्न लोग क्या कहते हैं और यदि पूछा जाता, वे शान्ति से अपना विचार देते थे। आखिरकार, वे सबसे बातचीत कर पूछते थे, “आपको कैसा लगता है, यदि हम इस तरह से काम करते हैं?”

जब अलग-अलग पदों पर आसीन लोग एक टेबल पर बैठे होते हैं, तो उनकी चर्चा जटिल हो जाती है। उस स्थिति में जो सद्भाव लाता है, वह लोगों की बातों को ध्यान से सुनकर उनके विचारों को समझने का दृष्टिकोण है, साथ ही निष्पक्षता के दृष्टिकोण से निकले शब्द से अहंकार पर नियंत्रण लगाता है। मैं समझता हूँ कि विशप स्टाल्सेट द्वारा प्रकट ऐसी निष्पक्षता का दृष्टिकोण सम्यक वचन के अर्थ के मूलसार को हमें दिखलाता है।

दुःख को गले लगाओ

जापानी भाषा में प्रेम (ai) के लिए प्रयुक्त चीनी कैरक्टर को दुःख (kanashi) के अर्थ में भी पढ़ा जाता है। शायद, इसलिए कि प्रेम करने और पालनपोषण करने से दुःख दर्द जुड़ा है, जिसे समझना आसान होगा, यदि हम एक माँ का सोचे जो हृदय से अपने बच्चे को प्यार करती है और उनका पालनपोषण करती है। सम्यक वाणी अर्थात् “जो सही उसे कहना” उस हृदय से जुड़ा है, जो ऐसे प्यार और दुःख दर्द का अनुभव करता है, साथ ही दूसरों को खुशी देने की सौहार्दपूर्ण इच्छा रखता है, क्या नहीं?

जेन आचार्य दोगेन (1200-1253) के शब्दों में “प्यारभरे शब्द प्यार से ओतप्रोत हृदय से निकलते हैं, और प्यार से ओतप्रोत हृदय का स्रोत अनुकम्पामय हृदय है,” और मैं सोचता हूँ कि विशप स्टाल्सेट के शब्द अनुकम्पा के विचार से अनुप्राणित थे, जो सभी धर्मों के अनुयायियों में समान रूप से हैं, और जिसे कोई भी स्वीकार करता है। सचमुच में, बौद्ध भिक्षु और कवि रियोकान (1758—1831) ने दुश्चरित्र भतीजे को स्वयं को सुधारने के लिए राजी किया, परन्तु समझा बुझा कर नहीं और नहीं डाँट फटकार कर, बल्कि अपने आँसुओं से जो निकलकर उनके गालों से नीचे गिर रहे थे, जब वे अपने भतीजे के बारे में सोच रहे थे। यह दृष्टान्त हमें बताता है कि सम्यक वाणी है, जो करुणा से भरा मौनभाव से व्यक्त हुआ।

हम उल्लंबन महोत्सव के मौसम के दौरान अपने पूर्वजों की आत्माओं को श्रद्धाँजलि अर्पित करते हैं, जिसकी वार्षिकी रिश्शो कोसेइ-काइ जुलाई में मनाता है। परम निर्मल पुण्डरीक पुष्प के खिलने का सोचते हुए, क्या हमारे लिए उत्तम नहीं है कि हम अपने माता-पिता और पूर्वजों के प्रेमपूर्ण हृदयता को एक बार फिर से याद करें, जो किसी और से अधिक हमारी खुशी की कामना करते हैं?

From Kosei, July 2018.



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

“समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं उसकी मुख्य बिन्दुयें”

संस्थापक निक्क्यो निवानो द्वारा जापानी में रचित मूल का धारावाहिक मासिक प्रकाशन इस माह से।

अमितार्थ सूत्र में शाक्यमुनि की धर्मदेशना है, जिसे उन्होंने मगध साम्राज्य के राजगृह नगर के बाहर गृध्रकूट पर्वत पर, सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का उसी गृध्रकूट पर उपदेश के ठीक पूर्व, उपदेश किया था। तदुपरान्त वे समाधि में दीर्घ काल तक लीन रहे। समाधि से निकलने के उपरान्त उन्होंने पुण्डरीक सूत्र के उपदेश का प्रारंभ किया।

इन परिस्थितियों के आधार पर, आवश्यक माना जाता है कि पुण्डरीक सूत्र पर जाने से पूर्व अमितार्थ सूत्र को पढ़ना और समझना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि यह सूत्र समेकित त्रिविध सूत्र के आकार को बड़ा करता और सार प्रस्तुत करता, मनोभाव को व्यवस्थित करता और मन को आगे की देशना के ग्रहण के लिए तैयार करता है। जब हम सिद्धान्त की सामग्रियों में आते हैं, तो हम गहरे अनुभव करते हैं कि अमितार्थ सूत्र को पूर्व में पढ़ने और समझ लेने से पुण्डरीक सूत्र को पूरी तरह से समझ सकते हैं।

अमितार्थ

अमितार्थ सूत्र का शीर्षक संकेत देता है कि “देशना जिसके अनगिनत अर्थ हैं।” इसकी व्याख्या दर्शाता है कि “अनगिनत अर्थों की देशना का मूलाधार केवल एक सत्य है।” इस एक सत्य में “कोई गुण नहीं है” चूँकि सूत्र में इसकी विस्तार में विवेचना नहीं है, अर्थ अस्पष्ट छुटा हुआ है। हालाँकि, इस अस्पष्टता को शाक्यमुनि ने अगले पुण्डरीक सूत्र में दूर किया है। शाक्यमुनि बताते हैं कि पुण्डरीक सूत्र के विस्तृत विवरण में “कोई गुण नहीं है” का मतलब अंततः पुण्डरीक सूत्र में दिखाया गया सत्य पर बैठता है। अमितार्थ सूत्र से पता चलता है कि पुण्डरीक सूत्र सबसे आवश्यक है, यह शाक्यमुनि द्वारा अपने सम्पूर्ण जीवन में उपदेशित धर्मदेशना है।

हालाँकि, अध्याय- 2 के रूप में, “धर्मदेशना” अमितार्थ सूत्र का केन्द्रबिन्दु है, जो बोधिसत्त्व महासुभूति के प्रश्नों का शाक्यमुनि का उत्तर है। केवल असाधारण अभ्यासों की राशि से सम्पन्न बोधिसत्त्व इसकी गूढ़ता गंभीरता को समझ सकते हैं। इसलिए शाक्यमुनि ने उन सूत्रों को मन में क्रमबद्ध किया जिनका वे उपदेश करने जा रहे थे। दूसरे शब्दों में, पुण्डरीक सूत्र के अलावा कोई अन्य सूत्र नहीं है, जिसमें “अनगिनत अर्थों” का विस्तार करने के बाद, शाक्यमुनि ने आखिरकार “कोई गुण नहीं”, का अर्थ “परमार्थ सत्य” किया है, जो सभी दृष्टियों से उनकी देशना का मूलाधार है, ताकि हर कोई इसे समझ सके। संक्षेप में, उन्होंने पहली बार साधारण लोगों के लिए “परमार्थ सत्य” को दर्शाया है। यही कारण है कि अमितार्थ सूत्र को पुण्डरीक सूत्र का आमुख माना जाता है, जो

सत्य का सूत्र है, आगे है उपायकौशल्य सूत्र की व्याख्या। यह भी कारण है कि पुण्डरीक सूत्र की गहरी समझ केवल तभी संभव माना जाता है जब हम पहले अमितार्थ सूत्र पढ़ते हैं, और इसके कारण, अमितार्थ सूत्र को समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्र का “आमुख सूत्र” के रूप में जाना जाता है।





अध्याय -1 सद्गुणी अभ्यासें

प्रथम अध्याय में बोधिसत्त्व महासुभूति ने समस्त जीवित प्राणियों के उद्धार के लिए बुद्ध के सम्पूर्ण गुणों एवं अभ्यासों की प्रशंसा की।

बुद्ध के सम्पूर्ण गुणों की प्रशंसा

बोधिसत्त्व महासुभूति ने शाक्यमुनि के मुख तथा शरीर में दृष्टिगोचर बत्तीस महापुरुष लक्षणों की प्रशंसा की। यह भौतिक शरीर में व्यक्त गुणों की परिपूर्णता के जश्र के अलावा कुछ अन्य नहीं है। वे देखते रहे कि बुद्ध इन अद्भुत गुणों से सम्पन्न हैं, जबकि उनका अस्तित्व दोनों के परे है, जिसका आकार है और जिसका आकार नहीं है। इसका अर्थ हो सकता है कि सामान्य व्यक्तियों की आँखों में उनका असल स्वरूप शायद ही बोधगम्य है।

सभी जीवित प्राणियों की वास्तविक प्रकृति इस प्रकार समान है, हालाँकि शरीर में इसकी वास्तविक प्रकृति की अभिव्यक्ति एक समान नहीं हो सकती है। बुद्ध के पास अनन्त गुण हैं, और जैसाकि उनके गुण शरीर में प्रकट हैं, सभी सहर्ष उनका सम्मान करते हैं, उनकी शरण में जाते हैं, उनकी अर्चना करते हैं, और पूरे हृदय से सम्मान में झुकते हैं। बुद्ध को जो भी अंतर्दृष्टि मिली है, उससे कभी संतुष्ट नहीं थे, लेकिन मार्ग के निरन्तर अभ्यास से उन्होंने अपना अविश्वसनीय सुंदर शरीर प्राप्त किया। हम इस दृश्य के लिए एक दृष्टिगोचर शरीर में आभार प्रकट नहीं कर सकते हैं, हालाँकि वास्तविक शरीर अदृश्य है।

यहाँ दो बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए। पहला है कि सभी जीवित प्राणियों की विशेषतायें उनकी सच्ची प्रकृति में समान हैं। अपनी सच्ची प्रकृति में सभी जीवन बुद्ध के समान पदार्थ का है, लेकिन हमारे अपर्याप्त मार्ग का अभ्यास और भ्रमित होने के कारण, दृष्टिगोचर शरीर में ऐसी त्रुटियाँ हैं, जिसकी बुद्ध के साथ तुलना नहीं कर सकते हैं। फिर भी यदि वे अपनी मूल प्रकृति में बुद्ध के समान पदार्थ के हैं, तो यह स्पष्ट है कि किसी भी रूप में उपस्थिति हमें बुद्ध के साथ एक बनने की क्षमता है, और इसलिए, एक तरफ हम सभी की बड़ी आशायें हो सकती हैं, लेकिन दूसरी तरफ, हमें रुकना और विचार करना भी चाहिए।

यह विचार समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्र के प्रारंभ से अन्त तक में व्याप्त है, और इस प्रकार इसे पढ़ने के लिए तैयार करने में, तथा प्रकृत रूप की समानता और द्रष्टव्य रूप में विभेद की

अवधारणा को मन में स्पष्ट बैठाने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

दूसरा बिन्दु है कि एक दृष्टिगोचर शरीर में बुद्ध की उपस्थिति कुछ ऐसी है जिसके लिए हमें वास्तव में आभारी होना चाहिए। शाक्यमुनि इस लोक में अवतरित हुए, और मार्ग का निरन्तर अनुसरण के उपरान्त, वे सम्पूर्ण गुणों से सम्पन्न हो गए। बुद्धत्व की स्थिति में पहुँचने के इस जीवन्त उदाहरण से हमें निर्देश मिलता है कि अगर हम केवल उन का अनुकरण करते हैं तो अधिक आसानी से बुद्धत्व के मार्ग का पीछा करने में सक्षम हैं, वनिस्पत शाक्यमुनि के जिन्हें दुसह्य दुर्गम मार्ग पर चलना पड़ा था। इसलिए हम उनके इस लोक में उनके आने के लिए आभारी हैं।

इस प्रकार, जैसा कि हम शाक्यमुनि की आकृति का सम्मान करते हैं और अपने हृदय में सहर्ष उनकी धर्मदेशना को ग्रहण करते धारण करते हैं, साथ ही हम बुद्ध के धर्मकाय में स्वयं को आत्मसात् कर सकते हैं। बोधिसत्त्व महासुभूति इस प्रकार हमें अपने भक्ति के केन्द्रबिन्दु को देखने का सही तरीका बताते हैं।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 10-16)





कृतज्ञता और सद्भावना

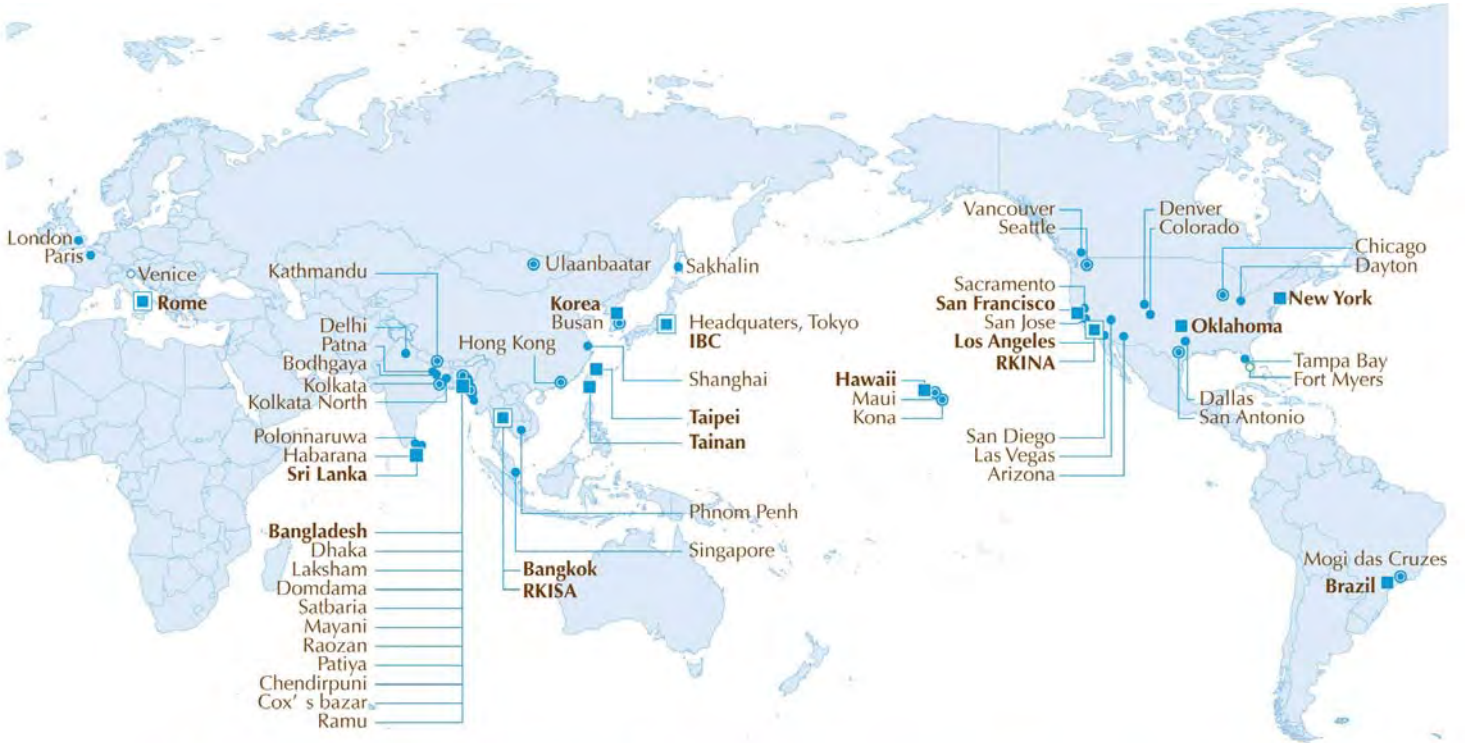
जुलाई माह में हम वार्षिकी उलम्बन उत्सव मनाते हैं। उस अवसर पर, हम अपने पूर्वजों की अटूट सिलसिला से मिला अनमोल जीवन के लिए एकबार फिर से कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहते हैं।

बुद्ध के दस प्रमुख शिष्यों में एक मौद्गल्यायन द्वारा अपनी मृत माँ को क्षुधित आत्माओं के लोक से उद्धार की कहानी से हमें सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प की शिक्षा लेनी चाहिए। हमारा दुःख हमारी आत्मनिष्ठ दृष्टि तथा आत्मनिष्ठ विचार से उत्पन्न होता है। ऐसी मनोवृत्ति से विद्वेष और तृष्णा पैदा होता है, जो आखिरकार दूसरे लोगों के साथ कलह उत्पन्न कराता है।

इस माह के संदेश में, प्रेसिडेंट निवानो की अष्टांगिक मार्ग के तृतीय अंग सम्यक वचन की व्याख्या है। सम्यक वचन का अर्थ है दूसरों को ध्यान से सुनना, उनके सम्पर्क में रहना और अपने अहंकार पर नियंत्रण रखकर दूसरों के साथ सद्भाव से रहना है।

मैं आशा करता हूँ कि अपने माता-पिता और पूर्वजों के संवेदनाशील प्यार के प्रति आभार के साथ हर दिन रहना चाहिए, साथ ही हमेशा दूसरों के साथ सद्भाव की भावना के महत्व पर ध्यान रखना चाहिए।

रेवरेंट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.
E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2018

Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibc-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar, New Delhi
110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna

Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai